...और शहनाई गूंज उठी

मणिमाला

बरखेड़ी नाम की इस बस्ती में पिछले अट्ठारह साल से शहनाई नहीं बजी थी। इस बस्ती की सारी व्यवस्था कुंआरी बेटियों ने सम्भाल रखी थी। 180 परिवारों की इस बस्ती में हर घर की बड़ी बेटी ने अपनी मांओं और भाई-बहनों की पूरी ज़िम्मेदारी ले रखी थी। कारण? बाप पियक्कड़ था। बस्ती में ही बना दी गई थी शराब की दुकान। वहां सब के सब पियक्कड़ थे।

इतने पियक्कड़ कि न उनको अपनी नौकरी की परवाह थी, न बीवी की, न बाल-बच्चों की। सुबह उठते ही बोतल खरीद लाते। जी भर कर चढ़ा लेते। फिर कहीं किसी नाली में ढिमला जाते। कचरे पर पड़े रहते। नशा टूटता तो फिर दूसरी बोतल चढ़ा लेते, फिर पड़ जाते। उठते तो तीसरी थाम लेते। बस, शराब और नशा। उनकी ज़िन्दगी में इसके अलावा और कुछ भी नहीं था।

यह बस्ती देश के एक बड़े राज्य मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में बसी हुई है। वहां एक बरखेड़ी नहीं हैं– सैंकड़ों हैं। सरकार ने करीबन हर बस्ती में शराब की दुकानें खोल रखी हैं। कहीं ये दुकानें स्कूलों के आस-पास खुली हैं तो कहीं मन्दिर-मस्जिदों के पास।

बरखेड़ी : साहसी बेटियों की बस्ती

अकेले बरखेड़ी गांव में पिछले पांच सालों में शराब पीकर पचास से ज़्यादा लोग मरे। यह बस्ती विधवाओं की बस्ती बन गयी। फिर पियक्कड़

बाप और अनब्याही बेटियों के नाम से बदनाम हुई यह बस्ती– या तो पियक्कड़ बाप की वजह से या शराब की वजह से। बाप के मरते ही बेटियों के कंधों पर मांओं और भाई-बहनों के भरण-पोषण की समूची पूरी ज़िम्मेदारी आ गई। उन्होंने बखूबी सम्भाला भी।

एक कंधे पर पियक्कड़ बाप का बोझ सम्भाला और दूसरे कंधे पर विधवा मांओं और भाई-बहनों की जरूरतों का बोझ। क्या-क्या नहीं किया पियक्कड़ों की इन बस्तियों की बेटियों ने। किसी ने मजदूरी की। किसी ने पुलिस में नौकरी की। किसी ने ट्यूशन पढ़ाये। किसी ने घर-घर जाकर सामान बेचे।

मुसीबत यह कि नशे में धुत बाप इन्हें यह सब भी न करने देते। घर से निकलने नहीं देते थे। लड़कियां बेचारी मांओं के सहयोग से चोरी-छिपे

जाती थीं कमाने, काम-धाम करने। अल्पना ने तो बताया कि वह रात में अपने पिता के सो जाने के बाद घर से निकलती थी और सारी रात पुलिस चौकी में पहरेदार की नौकरी करके पिता के जागने के पहले लौट आती थी। एक दिन पिता के जागने के बाद लौटी। बाप ने पूरा घर सिर पर उठा लिया। बेटी को मार-मार कर अधमरा कर दिया। मां बचाने की लाख कोशिशें करती रही, पर बाप की ताक़त के सामने उसकी एक न चली।

उसी दिन अल्पना अपनी तनख्वाह लेकर आई थी। उसने वह भी छीन ली। उसी दिन उसी वक्त शराब की दुकान पर चला गया। छक कर पी उस दिन उसने अपनी बेटी की कमाई से। जब नशे में धुत हो गया तो नाले के किनारे पड़ गया। बचे हुए रूपये जेब में पड़े हुए थे। उसे उसका दोस्त निकाल ले गया। वह भी पी गया।

अल्पना ने उठाया साहसी कदम

अल्पना ने अपनी ही बस्ती में शराब के खिलाफ़ मुहिम की। पहले एक...फिर दो...फिर तीन...चार...पांच...एक-एक करके तमाम बेटियां इस मुहिम में शामिल हो गईं। अब मांओं की बारी आई। वे भी शामिल हुईं। आन्दोलन ने जोर पकड़ा। जिनके पिता पी-पी कर मर चुके थे वे तो मर चुके थे, लेकिन जो जिन्दा थे उन्होंने अपनी ही बीवियों के खिलाफ़ आवाज उठाई। पुलिस बुलवाई। मुखबिरी की, लेकिन बेटियों की आवाज दबी नहीं।

जब आवाज़ आन्दोलन का रूप लेती चली गयी तो कई सारे नागरिक संगठन और महिला संगठन भी इस आन्दोलन में शरीक हुए। आख़िरकार वह दिन भी आया जब बरखेड़ी बस्ती में शराब की दुकान बन्द हुई। गांव वालों को सुकून मिला। इस बस्ती में बेटों की शादी तो की जाती थी, लेकिन बेटियों की शादी नहीं होती थी। पियक्कड़ बापों का सारा खामियाजा बेटियों को भुगतना पड़ता था। कोई भी रिश्ता बनाने आता तो नाले में पड़े हुए बापों को देखकर लौट जाता। बहुएं बेटे को लेकर पीहर चली जातीं या कहीं और नौकरी करने की जिद पकड़कर यहां से हट जाती थीं। बच गयी थीं सिर्फ़ यही बेटियां।

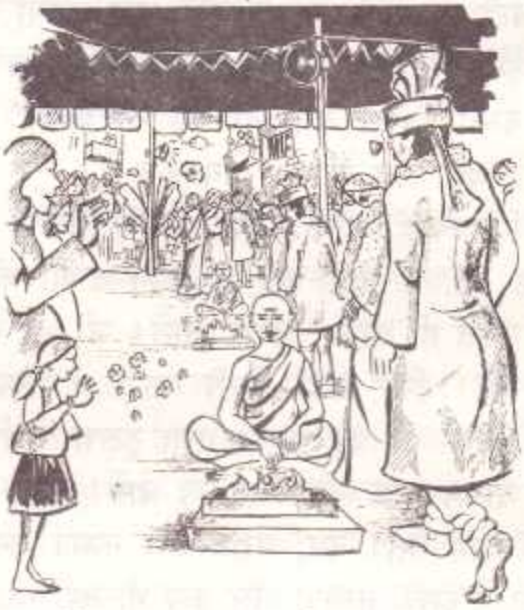

हिम्मत और सफलता का दौर

अठ्ठारह साल के बाद जब पिछले साल इस बस्ती से शराब की दुकान हटी तो इन्होंने उसी जगह पर एक चबूतरा बनवाया, खुद ईंटे इकट्ठा कीं। खुद गारा तैयार किया, हवन करवाया। जब इन्होंने हवन करवाने की शुरूआत की तो फिर एक बार आवाज उठी-विधवाएं और कुंवारियां कैसे हवन कर सकती हैं? इनके हवन से जगह शुद्ध नहीं हुई, पर उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने हवन पूरा किया और वहीं पर दुर्गा की मूर्ति की स्थापना की।

अल्पना ने बताया कि दुर्गा शक्ति का प्रतीक है। इसीलिए उन्होंने उस जगह पर दुर्गा की प्रतिमा की स्थापना की। यह उन्हें शक्ति देती रहेगी। दशहरे के दिन लड़कियों ने दुर्गा-प्रतिमा को विसर्जित भी किया। उसके बाद उसी जगह पर बारह लड़कियों की शादी हुई। अठ्ठारह साल बाद जब इस बस्ती में बारात आई और शहनाई बजी तो विधवा मांओं ने ही दूल्हे और बारात की अगवानी की। उन्होंने ही शादी के सभी रस्म-ओ-रिवाज किये। सबकी खुशी का ठिकाना नहीं था। इस बस्ती में अठ्ठारह साल बाद पहली बार यहां शहनाई बजी थी। सबने राहत की सांस ली और दूसरी गरीब बस्तियों की लड़कियों ने इन्हीं की राह चलने का संकल्प किया।

अब भोपाल की कई शराबी बस्तियों में लड़कियां इसके खिलाफ उठ रही हैं। उन्हें यकीन है कि अगर बरखेड़ी की लड़कियां लड़ सकती हैं, जीत सकती हैं, अपनी किस्मत आप लिख सकती हैं तो वे क्यों नहीं। अगर कोई आत्मविश्वास के साथ उठ खड़ा हो तो फिर उसे कौन रोक सकता है? कोई नहीं। कतई नहीं। कभी नहीं। □